अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

मंगलभावना समारोह: अपने आराध्य को विदा करने से फूटे भावुक हृदयोद्गार

-जन-जन का कह रहा मन, कुछ और कृपा कराओ भगवन

-मन को बनाएं मंदिर: महातपस्वी महाश्रमण

-कोयम्बत्तूरवासियों को अपने मंगल आशीषों से आचार्यश्री ने किया आच्छादित

-मुख्यनियोजिकाजी व साध्वीवर्याजी ने श्रद्धालुओं को किया उत्प्रेरित

17.02.2019 ए.के.एस. नगर, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु): जितना उत्साह, उल्लास, उमंग अपने आराध्य के अभिनन्दन में था उससे कहीं ज्यादा भावविह्वलता, व्याकुलता और व्यग्रता का ज्वार प्रत्येक कोयम्बत्तूरवासियों के हृदय में उठ रहा था। कईयों की भावनाएं विचारों की अभिव्यक्ति, गीतों की प्रस्तुति आदि के माध्यम से स्पष्ट देखी और सुनी गईं तो हजारों-हजारों श्रद्धालुओं की मूक भावनाओं का ज्वार मानों एक ही निवेदन कर रहा था-प्रभो! कुछ की दिन की कृपा कराओ। जीं हां! ऐसा ही भावुक माहौल था रविवार को गांधीपार्क में आयोजित मंगलभावना समारोह।

रविवार की प्रातः अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी गांधी पार्क स्थित प्रवचन पंडाल में पधारे। सर्वप्रथम साध्वीवर्या साध्वी संबुद्धयशाजी ने उपस्थित श्रद्धालुओं को अनाग्रह की चेतना जागृत करने को उत्प्रेरित किया।

उसके उपरान्त आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समुपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी के मन में संकल्प- और विकल्प चलते रहते हैं। जिस प्रकार बच्चे की चंचलता से आदमी परेशान हो जाता है। उसी प्रकार मन एक बच्चे जैसा और उसकी ज्यादा चंचलता से आदमी कभी-कभी परेशान भी हो जाता है। मन को एक सागर भी कहा गया है, जिसमें निरंतर तरंगे उठती रहती हैं। कभी राग भाव की तरंगे तो कभी द्वेष भाव की तो कभी अच्छी तरंगे भी उठती रहती हैं। आदमी को अपने मन को सुमन अर्थात् सुन्दर विचारों वाला बनाने का प्रयास करना चाहिए। मन में अनावश्यक गलत चिंतन, बुरे विचार न आएं, ऐसा प्रयास करना चाहिए। मन को नकारात्मक विचारों से नहीं सकारात्मक विचारों से भावित करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने कुल अपने तेरह दिवसीय कोयम्बत्तूर प्रवास, मर्यादा महोत्सव आयोजन आदि के संदर्भ में कोयम्बत्तूरवासियों को मंगल आशीष प्रदान किया साथ ही कोयम्बत्तूर की सार-संभाल के लिए मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी कुछ लम्बे समय तक का प्रवास कोयम्बत्तूरवासियों को प्रदान किया।

मुख्यनियोजिकाजी ने भी कोयम्बत्तूरवासियों को पावन संदेश प्रदान किया। मंगलभावना समारोह में सर्वप्रथम तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री निमर्ल रांका, आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री विनोद लुणिया, स्वागताध्यक्ष श्री पूनमचंद मरोठी व तेरापंथ महिला मण्डल-कोयम्बत्तूर की अध्यक्ष श्रीमत मधु बांठिया ने अपनी आस्थासिक्त और भावुक हृदयोद्गार व्यक्त किए। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री राजकरण गिड़िया ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मण्डल और तेरापंथ कन्या मण्डल ने संयुक्त रूप से विदाई गीत का संगान किया। बालिकाद्वय महिमा, भावना बोथरा ने गीत का संगान किया तो सुश्री रूचिका भंसाली ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। भारतीयार युनिवर्सिटि के प्रोफेसर डाॅ. पद्मनाभन, के.जी. हाॅस्पिटल के चेयरमने डाॅ. के.जी. भक्तवत्सल अपने उद्गार व्यक्त किए। अक्षय तृतीया महोत्सव की ओर से महिलाओं ने गीत का संगान किया। इस दौरान दायित्व हस्तांतरण का भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री हीरालाल चैपड़ा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों ने आदि ने अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों को जैन ध्वज सौंप व्यवस्थाओं का दायित्व सौंपा तो परम पावन आचार्यश्री ने मंगलपाठ का उच्चारण कर मंगल आशीष भी प्रदान की।